**B.Ed. 2nd Year**
Session – 2018-2020
**Subject – Pedagogy of History**
Course – 7 (B)/Unit – 2(d)
**Topic – इतिहास का पाठ्यक्रम**
**(Curriculum of History)**
Lecture No. - 46

**Dr. Amod Kumar Sinha**
(Assistant Professor)
**Department of Education**
**A.N. D. College**
Shahpur Patory
Samastipur

## भूमिका

इतिहास मनुष्य की वह सांस्कृतिक व सामाजिक विरासत है जो वह अपनी अगली पीढ़ी की हस्तांतरित करता है। अतः इतिहास के पाठ्यक्रम की रचना करते समय एकता, रूचि, समन्वय, तथा शैक्षिक मूल्यों का ध्यान रखा जाता है। **प्रो. घाटे (Prof. Ghate)** के अनुसार इतिहास के पाठ्यक्रम की रचना करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए –

1. जूनियर स्तर पर केन्द्रीय विचार को आधार मानकर पाठ्यक्रम की संरचना की जाए। पाठ्यक्रम ऐतिहासिक क्रम के अनुसार विकसित किया जाना चाहिए। जैसे – प्रारंभ में प्रागैतिहासिक युग, फिर पशुपालन, कृषि तथा ओद्योगिक युग के इतिहास का पाठ्यक्रम बनाया जाए।

2. पाठ्यक्रम में मानव विकास के लिए उपयुक्त विश्लेषणात्मक तथ्यों का चयन किया जाए।

3. तथ्यो का चयन करते समय इस बात का ध्यान रहे कि प्रस्तुतीकरण के समय एकता बनी रहे।

4. तथ्य वर्तमान जगत की समस्याओं के स्पष्ट करने वाले हों।

## इतिहास पाठ्यक्रम के सिद्धांत

उपरोक्त बातों को आधार पर इतिहास के पाठ्यक्रम की रचना करते समय निम्न दो सिद्धांतो का अनुसरण किया जाता है।

1. **सांस्कृतिर युग सिद्धांत (Cultural Epoch Theory)** – इस सिद्धांत के प्रतिपादक **डॉ. स्टेनले हॉल (Dr. Stanely Hall)** हैं। इस सिद्धांत के अनुसार इतिहास के पाठ्यक्रम में मानव जीवन के आरंभिक युग से लेकर अब तक का समस्त लेखा–जोखा गंभीरता पूर्वक क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसके अनुसार पाठ्यक्रम की रचना निम्न प्रकार की जाती है –

   (a) प्राचीन काल का इतिहास (प्राथमिक स्तर पर)
   (b) मध्य काल का इतिहास (जूनियर स्तर पर)
   (c)वर्तमान काल का इतिहास (हाई स्कूल स्तर पर)
   (d) वर्तमान काल का आलोचनात्मक इतिहास (उच्च स्तर पर)

इस सिद्धांत की आलोचना निम्नांकित आधारों पर की जाती है –

(a) यह सिद्धांत कल्पना पर आधारित है अर्थात्त इसमें वैज्ञानिकता का अभाव है।

(b) इस सिद्धांत के अनुसार नवीन खोजों तथा परिवर्तनों को कोई विशेष महत्व नहीं दिया जाता।

(c)ऐतिहासिक काल में व्यक्ति के विकास–क्रम में समानता के दर्शन नहीं होते।

(d) इस सिद्धांत के अनुसार मानव जाति के विकास का एक क्रम है।

2. **जीवन–गाथा सिद्धांत (Biographical Theory)** – इस सिद्धांत के रचियता **कार्लाइल (Carlayle)** हैं। इनके अनुसार, सामान्य पुरूष भेड़ों के समान हैं और महान पुरूष उन शिकारी कुत्तो के समान हैं जो भेड़ों की रक्षा करते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार महान पुरूष युग को प्रभावित कर इतिहास की रचना करते हैं। अतः इनकी जीवन–गाथाओं को इतिहास के पाठ्यक्रम में होना चाहिए।

इस सिद्धांत की आलोचना निम्न आधारों पर की जाती है –

(a) यह अधिनायकवाद पर बल देता है। अतः यह प्रजातांत्रित आदर्शों पर आधारित नहीं है।

(b) महापुरूष, काल प्रतिनिधि न होकर समय से आगे चलते है। वे अपने समय के क्रांतिकारी होते हैं किन्तु वे अपने समय के समाज का प्रतिनिधित्व नहीं कर पाते।

उक्त आलोचनाओं को ध्यान में रखते हुए इतिहास का पाठ्यक्रम तैयार करते समय निम्न बातों का अनुसरण करना चाहिए –

(a) जीवन गाथााओं का चयन विभिन्न स्तरों पर किया जान चाहिए।

(b) जावन गाथा में महान पुरूषों के आदर्शों, कार्य, उनके समर्थक, उपलब्धियों आदि का पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

(c)जीवन गाथाओं का ऐतिहासिक आधार बना रहना चाहिए अन्यथा ये केवल कहानी मात्र बनकर रह जाएँगी।

(d)जीवन गाथा का चयन करते समय इतिहास के काल खण्ड का अध्ययन करना चाहिए।

**समाप्त**